अगर दिल में जगह हो तो

भूटान की एक लोककथा

कुंजंग चोडेन   चित्र: पेमा शेरिंग

अगर दिल में जगह हो तो

भूटान की एक लोककथा

कुंजंग चोडेन

चित्र: पेमा शेरिंग

थिम्पू के पूर्व में और ट्रोंगसा के पश्चिम के ऊंचे पहाड़ों के बीच, एक छोटे से घर में एक बूढ़ी औरत रहती थी.

एक भूरी धब्बेदार मुर्गी, एक सिलेटी बिल्ली, और एक पीला कुत्ता उसके साथ रहते थे और वे उसका चूल्हा साझा करते थे.

एक शाम, जैसे ही सूरज ढला, परछाइयाँ लंबी होने लगीं और चूल्हे पर रात का खाना उबलने लगा. तभी अचानक एक कोमल आवाज सुनाई दी,

"रात होने वाली है. क्या मेरे लिए जगह है?"

बुढ़िया के दरवाजे पर लाल फ़टे कपड़े पहने एक साधू खड़ा था.

बुढ़िया ने उसका स्वागत किया और उसे अपनी प्रार्थना की वेदी के पास सम्मान से बैठाया.

उसने चूल्हे पर रखे बर्तन को हिलाया. वो भोजन परोसने ही वाली थी कि तभी एक तेज़ आवाज़ ने कहा, "यह पत्र ट्रोंगसा तक बिना देरी के पहुँचना चाहिए, लेकिन मेरे पैर बुरी तरह थक चुके हैं! मैं भी पस्त हो गया हूँ और थोड़ी देर आराम करना चाहता हूँ. क्या मेरे लिए घर में जगह है?"
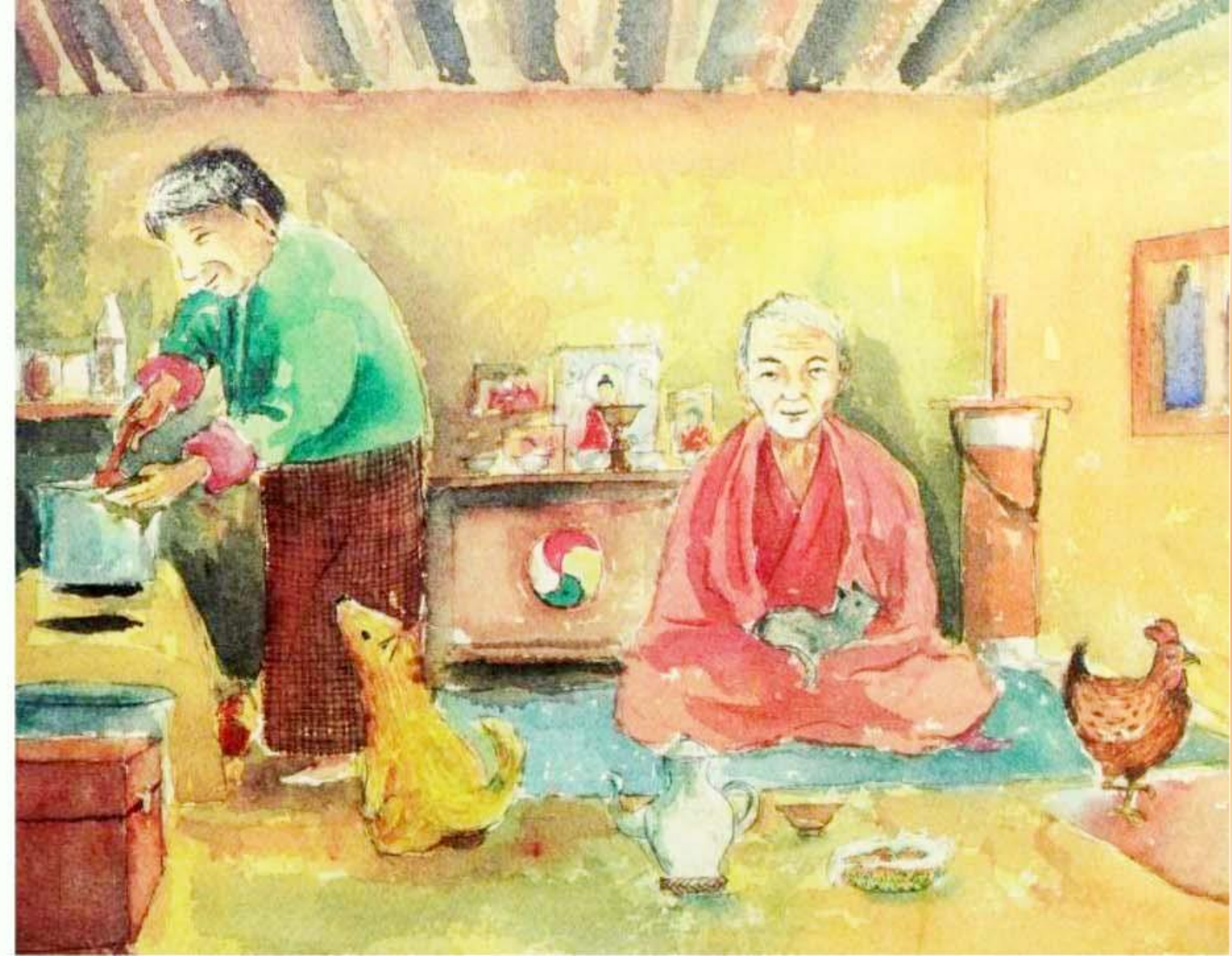
एक हांफता हुआ अधीर युवक बुढ़िया के दरवाजे पर खड़ा था. उसका नाम गरबा लुंगी खोरलो (हवा के पहियों वाला धावक) था.

बुढ़िया ने उसका भी अपने घर में स्वागत किया.

बुढ़िया ने अपनी चाय की चलनी को दीवार पर एक खूंटी पर लटका दिया, और गरबा लुंग खोरलो के बैठने लिए जगह बनाई.

फिर वो बर्तन को हिलाने के लिए वापस गई.

तभी दरवाज़े पर जोर से फिर से दस्तक हुई,

"मेरा याक खो गया है. लेकिन अब बाहर बहुत अंधेरा है और मेरे पास ठहरने के लिए और कोई जगह नहीं है. क्या मेरे लिए घर में जगह है?"

बुढ़िया के दरवाजे पर गुलाबी गालों वाली एक महिला, याक के बालों वाले एक लबादा में लिपटी खड़ी थी.

बुढ़िया ने उसका भी स्वागत किया.

उसने अपने शेल्फ के नीचे एक जगह साफ की और नए मेहमान को बड़े प्रेम से वहां बैठाया.

अंत में, बुढ़िया रात का खाना परोसने के लिए तैयार थी.

लेकिन तभी दरवाजे को किसी और ने खड़खड़ाया.

"हमारा गधे ने अब एक भी कदम आगे चलने से इंकार कर दिया है.

हमने उसे जोर से धक्का देने की कोशिश की लेकिन उसकी बेचारी बूढ़ी टांगें अब बुरी तरह थक चुकी हैं.

क्या आज रात हम यहाँ रुक सकते हैं.

क्या हमारे लिए घर में जगह होगी?"
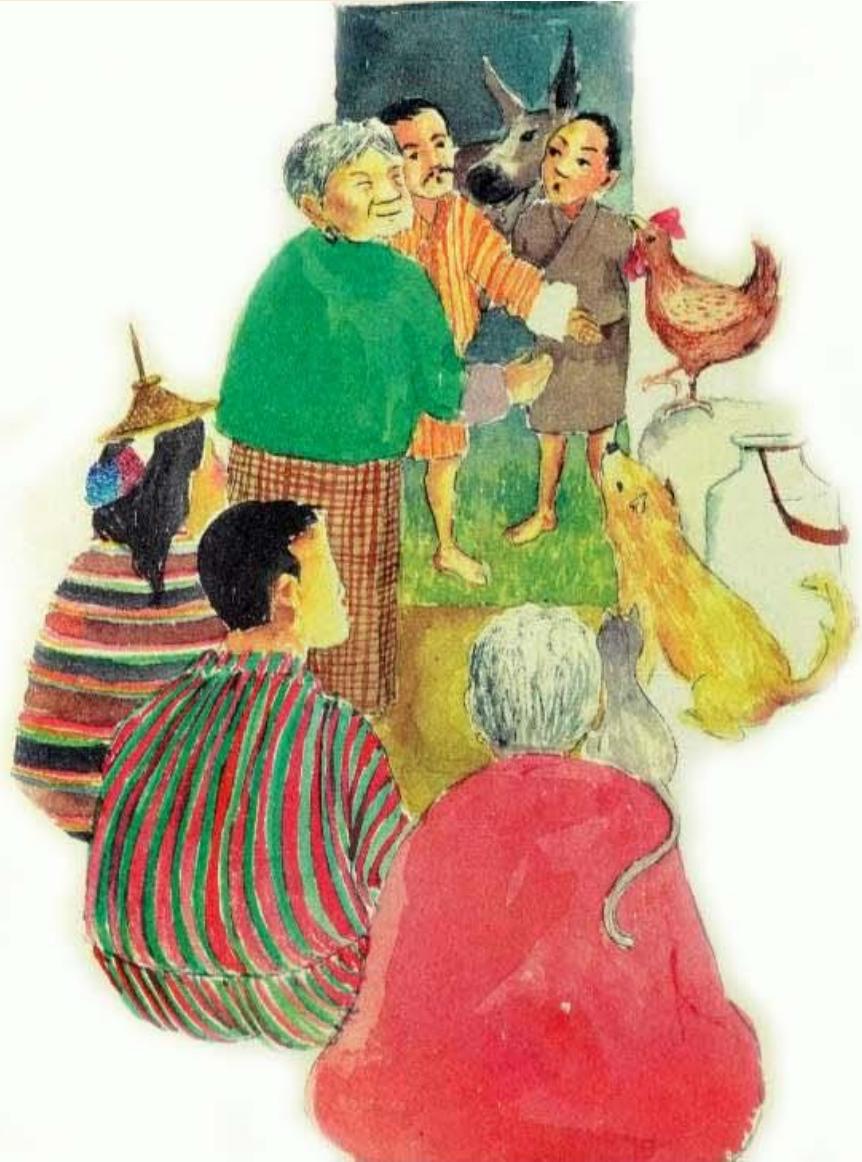
दो आदमी और उनका गधा, बुढ़िया दरवाजे पर खड़े थे.

बुढ़िया ने अपने सभी मेहमानों को देखा और उसने खुशी से कहा, "अंदर आओ और आराम करो."

फिर वे दोनों आदमी भी घर में अंदर आ गए.

वे सभी बुढ़िया के बर्तन में से रात का खाना साझा करने के लिए एकदम सही समय पर आये थे.

बुढ़िया ने सबको खाना परोसा: एक को शलजम के पत्ते का एक टुकड़ा मिला, दूसरे को हड्डी का एक छोटा सा टुकड़ा, तीसरे को सूप की कुछ बूंदें मिलीं और इसी तरह...

मेहमानों ने रात का खाना खाया और अपने-अपने कटोरे साफ किए.

खाना खाने के बाद और आराम करने के बाद उन्होंने बुढ़िया को धन्यवाद दिया.
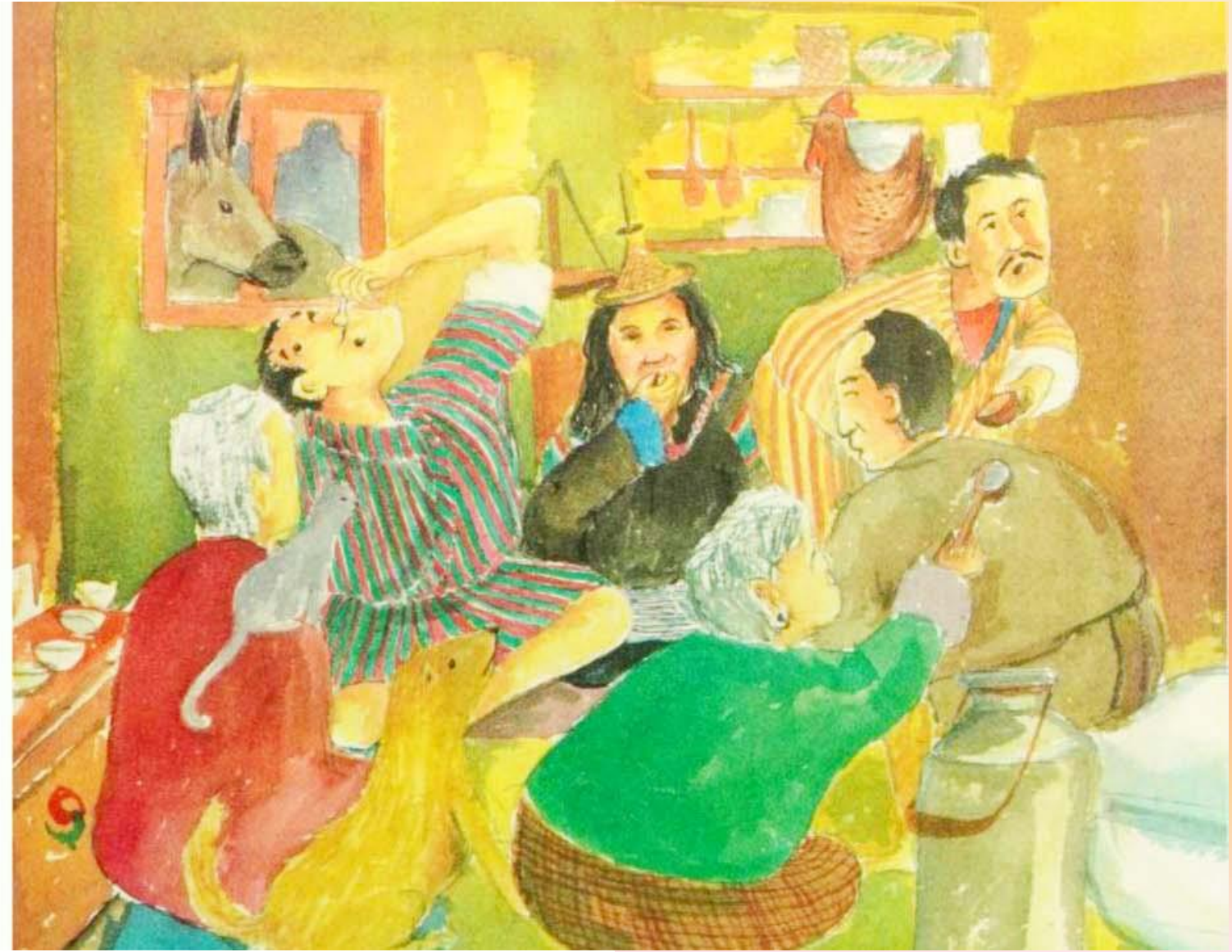
"आपके पास इतना छोटा सा घर है, फिर भी आप हम सबको उसमें फिट करने में कामयाब रहीं. आपने यह कैसे हासिल किया?" सब लोगों ने आश्चर्य से पूछा.

बुढ़िया ने जवाब में एक खुशमिजाज मुस्कान बिखेर दी.

लेकिन सज्जन साधु ने कहा,

"अगर तुम्हारे दिल में जगह होगी
तब तुम्हारे घर में हमेशा जगह रहेगी."

समाप्त

"क्या मेरे लिए जगह है?"

एक घुमक्कड़ भिक्षु ने उस बुढ़िया से पूछा जो पहाड़ी पर रहती थी.

वो सवाल बार-बार दोहराया गया,
क्योंकि एक-के-बाद-एक करके तमाम आगंतुक आए.
दयालु बुढ़िया ने उन सभी का स्वागत किया.

लेकिन वे सब उसके छोटे से घर में कैसे फिट होंगे?

भूटान के प्रमुख लेखक कुंजंग चोडेन की इस आकर्षक कहानी में
दरियादिली और आत्मा की उदारता के बारे में
एक महत्वपूर्ण शिक्षा शामिल है.